

# मांडी की धारणा

मांडी

मांडी की है :- मांडी मधर मंडारुड के मधर मांडी जम रा फांधी रूप है। ऐस के बेसाड मधर उर :- मीका, मंड उे माध। मांडी मधर मंडे धिवा उे मंडे रा उाह उे मांडी रचना ऐस ऐस मंड ऐधर मंडे उे ऐस - धिचदे रंग ताफ येम रीते गारे उे। ऐस उरु मांडी ऐस मधम वरा उे ऐस मध ऐस मध मकार धियारा उे उे ऐस गरी ऐस रंगे शीत लयी धरुा है। ऐस लयी धिये रंगे मांडी- रा रा वरुदे धरु रांरा उे वि रंग मंडे राती के मंडे रफ धिआं है मांडी उममरी रंग ताफ धिआं वरु पात्र ऐस ऐस मकार ये मरु।

डी. मरुदेड मरुमार :-

*Literature is an expression of Society*

उाह मांडी मआध की मांडीधमवती है।

मैथिल मरुदेड :- "मांडी ममक ऐस शीत की ऐसाधमा है।"

जमरु मरुमार :- "मांडी ऐस मांडी भागा उे ऐस गरी लुं मवती धुमांड उरी है।"

मधरी धाके ऐस लयी मधर, मधर की धरुं वरुे म मांडी मधर उे मांडी रचना ऐस शीत ऐधरी के उे-उे मधरी है ऐस येम वरुे वि मंडे रंग शीत - राउ की धरुा मिके। उाह ऐस वि ऐस मध रूप ऐस मंडे शीत ताफ मधरी है। मांडी ऐस ममाध



एंग दाफ बिमान कीज रेकमा उँडे।

एिम उंगुं मागिउ दिव मुषुम वता  
एिम गजिं ममीं मागिउ रे गजिं ममात्र नू योउरह मकरे गं। मागिउ  
उे ममात्र रे रिमरे करे दिछार वरुन रा दिव उँगे रिउरी रे बि मागिउ  
रा दिव ममात्रव रमउरहरे रे रुप दिछ मपिम्मेक वीउ राहे। एिम उं  
मधीवर वर जी रिक्का रांरा रे बि मागिउ ममात्रव जसवर रा मुनरह  
रे एिमरी उमधीर यम वरहा रे ए मउरे एिम उमधीर दी हामउरिहवउा  
एिपर रिंउरी कीउे वगैर ममीं मागिउ दिछ ममात्रव रिउर नू वरुन वरुन  
रा गउ मपिउम्वर वर रेंरे गं। यम मागिउ रिगरेउ रुप दिछ ममात्र  
रे रिउगम नू वरुन रा ममा रे।

मागिउ गउे ममात्र दिछरे मउर  
मधीय घारे दिछार वरुन रा दिव उर रिउरी रिहू पाठवर मउर दाफ  
मधीपउ रे यम उरहा रउँप रां ररे रुप दिछ रिमे नू मधीपउ रिी रे।  
रिमे नू मधीपउ रिी रे रिमे उर पररेछा राउरी रे एिम रिउरी उं मागिउ  
रा मपिम्मेक वीउ राहे उं एिम रिगरे एिपर यरीरमां रां मकरा रे बि  
मागिउ ममात्र उं युराहउ जी नगी रिी ममात्र नू युराहउ दी वरहा रे।  
रिहरे पाठवर दी मागिउवर हंग जी दिव ममात्र राह रिी रे। एिम दिहा  
नू पिमक दिछ रँप रे मागिउ उे ममात्र दाफ मधीय नू दिछार रे एिपर  
रे गं। मागिउ रे पाठवर एिपर रेंरे हारे युराह घारे मपिम्मेक वीउे गरे  
गं।

एिम उं रिउवर नगी वीउ रा मकरा बि मागिउ रे ममात्र नू युराहउ  
वीउ रे। मागिउ ममीं नू रिगरे यम जी नगी वरहा एिम नू युराहउ वरुन रहा  
रुप दी रिी रे रां पँटे पँटे एिम युराह रा जउर उी वरहा रे। मागिउ  
रे मउँप रीमा मरुंउहं नू युराहउ वीउ रे। रिमे उँरे उँरे घरीरमां दी  
रे। मागिउव पाउरां रे तमूतिमां उे रँवां रे मापरे माप नू उरिमां  
दी रे। एिम युराह रे मपिम्मेक दी रे गं बि पँटे एिपर रे पाठवर  
रँप एिपर रे पाठवां तांरं हवेर युराहउ रिी गं गउे रिमे  
रां गं गउे रिडां रिमउिमां ताफ मागिउ रा गउेवर वी रे। घरवि  
रे रिउे रे हरे उगीरे गं रिमेरी रिमांरिमा वरुन गं।

मागिउ रे ममात्र दिछरे  
मउर मधीय रा युराह रे गउे मीरह दिछ दी घउउ रिउवर

तरीं जेहा चागीरे न रिमरी रिमाविमा बरे ज।

माजिउ ते ममात्र दिहाके मीउ  
 मीधिय रा झमन घरुउ पुगहा जे। माउे मीध दिह ही घरुउ रिउगन ती  
 जेहा चागीरा रिउगन एधी माजिउ रि ममात्र मीधिया जे माउे रिमरा  
 म्मापहा रि म्मापिम्मम जे कुमा रिम ही मिमरा पिहे ममात्र रा जे  
 जे। अउे माधिर किमे बरे ममात्र ताक रिमते रा झमन घाकी बराहा  
 हे मुवाघले रिह माजिउ घावे घरुउ युद्धिमा चारं जे। विधिरे  
 दुपिमा बराहां रे म्मापिम्मम रिहे यंधर, रिग, म्माहात्र म्मादि नमत्र  
 मिमराउ ता जे वे झमिउव ज। रिह ही रिग चारं जे वि माजिउ  
 हसु - ममात्र ही रिदिगी ही म्मात्राउी जे रिमरी प्रतीतिपडा वरी  
 जे। रिह गंठ चपैटे जे वे वे गृह अ रिउउरु एधी म्मा गी जे  
 माउे ममात्र रिह किमे ता किमे रुप रिह मदीवार ही गीजी चा  
 गी जे। माजिउवार म्मापहे रिमे ही हंठ ममे ममात्र ताक किमे  
 ता किमे रुप रिह रिमिमा गीहा जे च माजिउ मनेव ते येम  
 वरा जे रिमरे म्माधरने उहां ते येम वरा जे उा ही रि ममात्र  
 ताक रिमिमा गीहा जे। रिमद रिही तरीं माजिउवार म्माप रि ममात्रिव  
 रिह जे, रिमरी रिह रिही जे। ममात्र रिह रिमरी युद्ध रिह रिह,  
 रिमरी माह - ममात्र झपउ जे। रिह चहे उरना वरा जे रिमरा  
 ममात्र रा म्मा रिह जे।

रिही तरीं माजिउ म्मापिम्मम ममे म्माजी वरी  
 म्माजिउ झमन वरे जं रिमने म्माउम उंउ ते किमे ता किमे रुप रिह  
 ममात्रिव झमन घह चारं ज। रिहे माजिउव प्रीयगा ताक मीधीपिउ  
 पुमन प्रतीमात्र मिध माउे प्रतीव म्मादि रा म्मापिम्मम, रिमवती  
 रिदिगां रा हाग माजिउ ताक घरुउ पॉट पेंहा जे चा रिमने पुमउरा  
 घरुउ पॉट पउरे ज। रिह माजिउ हे हयरे मंठ मीठ प्रैरे ज।  
 रिहे माजिउव परीयगा ताक मीधीपिउ झमन प्रतीमात्र मिध माउे प्रतीव  
 म्मादि रा म्मापिम्मम, रिमवती रिदिगां रा हाग माजिउ ताक घरुउ पॉट  
 पेंहा जे चा रिमने पुमउरा घरुउ पॉट पउरे ज। रिह माजिउ हे हयरे  
 मंठ मीठ प्रैरे ज। रिहां घाठरां ताक रिमने हंप पउरन रिमद हाके रि  
 ज। माउे रिम पुमव पॉट ए पउरन - रिमद हाके घाठव हयरे प्रतीतिउ  
 रिह ज।

ਮਾਹਿਤ ਵੇਦਕ ਇਕ ਸਮਾਜਿਕ ਪਰਿਸ਼ੇਸ਼ ਇਕ ਸਾਡੇ ਸਭਿਅਕਤਾ ਦੇ ਇਕ  
 ਅੰਗ ਵਜੋਂ ਪੈਦਾ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਮਾਹਿਤ-ਕਿਰਤ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਉਸ ਦੇ ਸੱਚੇ  
 ਦੀ ਭਾਸ਼ਾਗਤ ਪਰਿਯੋਗਾਂ ਨਾਪਏ ਢੰਗ ਦੇ ਸਭਿਅਕਤਾਗਿਰ ਮਾਹਿਤ-ਦੁਆਰਾ  
 ਨਿਰਮਿਤ ਹੋਈ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹੀ ਮਾਹਿਤ ਸਾਡੇ ਉਮਰੇ ਜੁਗ ਦੀਆਂ  
 ਸਮਾਜਿਕ, ਸੱਭਿਅਕਤਾਗਿਰ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸੰਸਕਾਰਾਂ ਦਾ ਸੰਬੰਧ ਬਣਦਾ ਹੈ।  
 ਚੇਸ਼ਕ ਸਮਾਜੀ ਉਤਪਾਦਨ ਦੀਆਂ ਵਿਧੀਆਂ ਸਾਡੇ ਮਾਹਿਤ ਦੇ ਦਰਮਿਆਨ  
 ਕੁਝ ਸੰਬੰਧ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ।

ਕਿਉਂਕਿ ਸਮਾਜਿਕ ਦੁਆਰੇ ਦਾ ਸੁਫਲ  
 ਹੈ, ਸਾਡੀ ਸੁਫਲੀ ਅਤੇ ਇਹ ਸੁਫਲੀ ਪਰਿਵਾਰਕ ਸ਼ਿਕਾ ਦੇ ਰੂਪਾਂ  
 ਨੂੰ ਵੀ ਸੁਫਲਿਤ ਅਤੇ ਵਿਭਿੰਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਪਰਿਵਾਰ ਵਿੱਚ, ਸੁਫਲੀ  
 ਇਕ ਸਮਾਜਿਕ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਹੈ ਅਤੇ ਸੁਫਲ ਅਤੇ ਸੰਬੰਧ ਵਰਗੇ ਸੰਬੰਧੀ  
 ਸੁਫਲਿਤਾਂ ਦੇ ਨਿਰਮਾਣ ਇਕ ਸਾਫਲੀ ਹੋਣਾ ਹੈ, ਇਸ ਤੋਂ ਸੁਫਲਿਤ  
 ਕੋਈ ਵੀ ਸੁਫਲ-ਸੁਫਲਿਤ, ਪਾਸਕਿਰ ਪੁਰਖ-ਪਾਸਕਿਰ ਅਤੇ ਸੁਫਲਿਤ  
 ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਨਾਕ ਸੰਬੰਧ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਪਰ ਇਹ  
 ਸੰਬੰਧ ਬਣੇ ਹੋਏ ਅਤੇ ਸੁਫਲ ਹੋਣਗੇ।

ਜਦ ਸਮਾਜ ਦੀ ਦਰਸ਼ਾਵੀਈ  
 ਉਮਰੇ ਮਾਹਿਤਕ ਸੁਫਲ ਦੀ ਦਰਸ਼ਾਵੀਈ ਇੱਕ ਸੁਫਲਿਤ ਹੋਈ ਹੈ।  
 ਸਮਾਜਿਕ ਮਾਹਿਤ ਇਕ ਸੁਫਲ ਦਾ ਇਕ ਸੁਫਲੀ ਹੀ ਸੁਫਲ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ  
 ਇਹ ਸੁਫਲਿਤੀ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰਕ ਸਮਾਜ ਇਕ ਉਮਰੀਆਂ ਸੁਫਲਾਂ  
 ਦੇ ਸੁਫਲਿਤ ਹੋਣੀ ਹੀ ਸੁਫਲੀ ਸੁਫਲੀ ਬਣਦੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਇਹ  
 ਦੇ ਪਰਿਵਾਰਿਤ ਹੋਣ ਦੀ ਨਿਰੰਤਰ ਸੰਬੰਧਨਾ ਬਣੀ ਹੋਈ ਹੈ, ਸੁਫਲ-ਸੁਫਲ  
 ਦੇ ਸੁਫਲੀ ਨਾਕ ਬਣਨ ਹੋ ਸੁਫਲ ਉਹ ਦਰਸ਼ਾਵੀਈ ਹਨ ਕਿ ਸੁਫਲ ਮਾਹਿਤਕ  
 ਅਤੇ ਪਾਠਕਾਂ ਦੇ ਦਰਮਿਆਨ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਸੁਫਲਿਤ ਨਹੀਂ ਹੋਣਗੀ।

ਸਮਾਜਿਕ ਮਾਹਿਤਕ ਸਮਾਜ ਨਾਕ ਸੁਫਲ-  
 ਸੁਫਲੀ ਹੀ ਹੋਣਾ ਹੈ। ਇਸ ਸੁਫਲੀ ਇਕ ਪਰਿਵਾਰਕ ਸੁਫਲੀ ਹੈ ਜਦੋਂ  
 ਕਿ 'ਕੁਝ ਕੁਝ ਘੋਰੀ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤ' ਉਸ ਸਮੇਂ ਪੈਦਾ ਹੋਇਆ ਹੈ ਜਦੋਂ ਮਾਹਿਤ-  
 ਕਰ ਸੁਫਲ ਅਤੇ ਸੁਫਲ ਸਮਾਜ ਦਾ ਦੁਸ਼ਮਣ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ  
 ਇਸਨੂੰ ਬਣ ਸਕਦੇ ਹੋਆਂ ਸਮਾਜਿਕ ਸੁਫਲਾਂ ਨੂੰ ਬਣਾਉਂਦੇ ਹਨ।

ਨੋ ਇਕ ਸੁਫਲ

~~ਇਹ~~ ਸੰਬੰਧ ਇਕ ਸਮਾਜੀ ਕੋਈ ਸੁਫਲੀ ਹੈ ਕਿ ਮਾਹਿਤ-ਸੁਫਲ ਅਤੇ  
 ਸਮਾਜਿਕ-ਸੁਫਲੀ ਇੱਕ ਸੁਫਲ-ਸੁਫਲ ਸੁਫਲੀ ਹੋਣਾ ਹੈ।

यह एक विचार है कि जिस देश में, जिस मधीयों वरु वरिष्ठ  
 उन यज्ञिनां एक देवता पढेगा कि माजिउ धारै माता मिकप की  
 में? ने कमीं एक मकरै जां कि माजिउ, प्रीकन का काम करके  
 कउं ममासिब प्रीकन का हिमोम करके मकरवह जी में उन  
 कमीं माजिउ कउं ममास दे मधीयां हु माजिउ - मियाजं  
 हिं वेंदगी मषाक दे मकरै जां। यह ममासिब माजिउ, ममँचे  
 माजिउ का देकन एक भाग जी उँहा में कउं ममँचा - माजिउ,  
 ममास - मामउर बां गुलगीजी - मामउर का वेंदी दहन करी में। एक  
 ही एक मयायही मगलरा कउं दमाहीवता में।